0

विकालन।

मध्य छ ভाষার মধার বেদলাস প্রনীত জামস্তাগ-- जात्रपंज वावयुक्त नार्य एम भरनाहत जेला थानि श्रीमिक्त পাছে, ভাছাই অবলম্বন কয়িয়া উবাহরণ নাম প্রদান-পূৰ্বক নানাৰ্থ্য সললিও ছন্দৰশ্বে এই পুত্ৰু থানি বিব্চিত হইল। ইহা মূলগ্রান্তের অবিকল অফুবান নহে। গতপরী মাত্র পবিগৃহীত হইগাতে। আর সকা সাধারণে পঠি স্বলভের নিমিত্ত মূলগ্রহের (অবিকল) ভুত্তহ অংশ দদ্দ পরিক্যাক্ত হইষ্ কুসদ্বত বোদে ও রমপুটির নিগিত কোন কোন স্থানে তুওন ভাব সন্ধিৰেশিত হই-शाष्ट्र।, मःकुछ छेलाशान भारते य धकात श्रीिंछलाङ, হইয়ু' থাকে এবং ভাছার বর্ণনা শুনিলে চমৎকৃত ছ-ইতে হঁয়। এই পদ্য জনুবাদ পাঠে ভাছার সহস্থগের একাংশেরও প্রজ্ঞাশাকর। যাইতে পারে না। যেহেতু প্রারচনাবিত্তরে আমি এই প্রাথমিক লেখনী সঞ্চালন 'ধরিতেছি। যদিও মংকর্তৃক এই ক্লুক্র পদা বিশুদ্ধ পদ্যোদ্যান বিক্ষিত, পুস্পমধুপায়ী মধুব্রত স্বরূপ পাঠক निक्रतत निक्र मगापृष्ठ इटेरव ना, टेहा मुखा; उथाणि शहा

तमार्श्वानक शांत्रकहरम्ल कुशिशृधं सुरुक्किसरस को मुख वन्त तकराइ निल्विष्ठा क्रोल हेश ममाक् श्रादार एक इरेश मालात्व लाठेकशत्वत गरीति आहत्ववीस क्रोड़ र लग्न हे कर क्रममारुक्किष्ठ। व्यालाति मालुक रहेलाम। आइकार हि स्वाप किछ श्रीके भ्रायमान्त्री व्यालमाहित्य मगीत, मिनवास श्रार्थमा हि शनिष्ठ के कृष एत्र. कालमानितार क्रामानक मा प्रश्चाय एक उन्हे जनकारवार व्यावस्थित हेनाह मा प्रश्नाम क्रा स्थान क्रा स्थान क्रा स्थान

সক্ষান্তর। শ্রীকা(মন্ত্রন্তর কন্ম) সার্কিম মালিহাটী।



ভিষাহরণ।

অস্তাশার ছন্দ ।

দলাবলী বলি বাজা বিঞাহকেশ্রী। वान मादन है। इ शब्द विशास भागति। হ ছিল নে ত্রিদংসারে বীর চূড়ামণি। 'রে দশ শত করে অন্ত্র শোভা করে। ত'ন আ ম মুকো তেন কোথা আছে সীর क कि छ। क बारब एम मस्हर न स्थाफ कर ह भीय श्रेट्र श्वर्ष करत राम एम श्रिमाकि । ও দালে ককণা করি বর বিভাবেছ। বে সমরে ৫শ: শভ করে সুকিন্টির। अथि दीत **भगा हहेग्राट्ड १**त्राउटन ॥ ভাই বলি দে প্রমুপাধিপ নৃত্যুপ্তর : ি ভুবনে মম সক্ষে যুবো কেনবীর। কে আছে সমরে বল গুলি ভোমা বিনা। •ভাবে কে পূরাবে মোর মনের মনন। কুপাকরি রণ যদি কর এক বার :: ক্রণ আশে যুদ্ধ করি দিক্পাল দলে। ভয়ে ভীত হয়ে তারা মব পলাইল। म आंगां निताभां हत्न वसूः शतिहति। ছিল পুরভাগে গিরি তারে মুন্ট্যাঘটিভ ন ভূমিসাৎ করে আইলাম নিজালয়॥

উষাহরণ।

জিলি ক্ষিক্ষি বাক্য জোগে শূলধারী।

তিপ্রারি অগ্নি সম হরে কহিছেল।

মাইত এখনি মম শূলে তোর প্রাণ।

অরে মৃঢ়াধম দৈতাপতি কি সাহলে।

বাঞ্চা করিয়াছ মলে মম সঙ্গে রণ।।

থিয়তক বলে তোরে আজি ক্ষমিলাম।

তারে বান শুন তোর মুক্ষের বিধাম।

যে কালে সহসা সোধচুড়া ভাজিবের।

সে কালে পাইবি তুই মম তুলা বীর।

ভার সহ যুক্ষে ভোর দর্গা হবে ক্ষম।

ধূক্জিটীর এত বাকা শূলে লৈড।

না বুঝিয়ে দেব মায়া আদি শিক্ষাশ্র ।

অন্তরে সে বীরে সদা ভাবে পাব করে।

শ্যাম বলে ওহে বাণ ভেবনা ভেবনা।

পূরাবে তোমার উষা মনের বাসনা।।

গ্রন্থারন্ত ।

वान कमा। खेबांत करणटक शास्त मानी । स्वीम स्वीमाना दाना वहरम स्वाकृती । म्यानाम स्वीकृति स्वीकृत स्वीकृता कनी हा कि स्वाकृति स्वीकृत मिनामनि ॥ माने कि स्वीकृति स्वाकृत स्वाकृत । हा स्वीकृति स्वीकृति स्वाकृत स्वाकृत स्व

পঞ্চশরে কটাক্ষের সম কেবা করে। কটুডায় তার কাছে কত কটু **ধরে** ॥ নাসার গঠনে ভিলফুল গড়িয়াছে। খগপতি চঞ্চল কি শোভে তার কাছে।। সুধার আধার বিধি অধরে দেখিরা। তাজিল বান্ধালি বিংশ্ব তিক্তরস দিয়া।। হাসিতে উথলে যার অমৃতের সিন্ধু। কতক্ষণ লাগে তার ভুলাইতে ইন্দু ॥ मस कांति (कति हेम्मू कीम कत करत। দিন্দুর মার্ক্লিভ মতি কন্ত শো**ড' খ**রে 🗉 যদি করে কণ্ঠরৰ উষা রূপৰভী। শিথিবারে কোকিল বিকল হয় জড়ি 🗈 ञुक प्रिथ जुक्किमी विवद्ध मुकात । জলে গেল পদ্মৰাল কাঁটা লয়ে গায় ! নিন্দিত কদম্ব ঘট গী**ন পরে**গধরে। पिशा नाष्ट्रिय दुः रथ त्क कां**छि** भरत !! जूरंन विश्वश्नी कारम रशोवरनत रकोरत । बाक्तिश ८त्रध्यक धनी जिवलित एकारत । **७ मक (भरनाइ हांत्रि किंग्रे मत्रणान)** छान প্রণমিয়া ছরি পলামেছে বলে।। দেখি উচ্চতর নিতম্বের **পরিপাট**। ভেবে ভেবে লোকেতে মেদিনী ছলো মানী।। নাভিকূপে বদে কাম লয়ে সপ্তললে। खन ठक्कवांक लक्क्यु लोबांवली इस्त ॥

রুস ভাণ্ডারেতে রতি আছে মূর্ত্তিনান। ভারে রক্ষা করে কাম লয়ে পথ্যবাণ 🕫 করিকর জিনি চা**ৰু উৰু শে**ভা কৰে ৷ ভার কাছে রামরস্তা কত শোভা ধরে।। ভয করি করিকরে কিশলয় দলে। লুকায়েছে রক্ত * ভদল পদতলে।। **हक्तमुथी** डेवा यमि कत्रस्य गमन। ভাই দেখে শিথে গতি মরাল যারণ্য শুনে যদি ভুক্ক তার মুপুনের ধনি। नीत्र इटेश' शरफ शस्त्रा कपनि।। महादीत अभिकक्त कारणत क्रमात् কি আছে রূপের সম কাম পিতাযার। ামিনীর শেষে উষা জিল খুমাইয়।। স্বপনে বরিয়া ভারে উঠে চমকিয়া।। ইতস্ততঃ দেখে বালা অৰণ নয়নে। স্থানবেহারী ভারে হেরিবে কেমনে।। क्षाननार्थ ना शहिश श्रभारश्वमनी। ব্যাকলা হইলা যেন মণিছারা ফণী ।। শ্রমধীরা হইয়া ধনী ধরাতে পড়িল। বিরহ আসিয়া বেগে অমনি ধরিল 🖰 माम बर्टन क्या टिंग्स करत क्यानि। বিছার জ্বলন কভ ভবু ফুলবাণ।

विव्रह।

মুলিন	रामम हेन्द्रु,	শুক হয়	স্থের	সিন্ধু,
	উথলিল বিরহ স	দাগর।	•	
কান্দে গ	উধা রসবতী ,	नां प्रा	থয়া স্বপ্ন	পতি,
	নেত্ৰজনে ভাসে	পয়োধর	11	
বিরহ্ বি	বিকার জ্বালা,	সহিতে ন	া পারি	বালা,
	কোমশান্সী পরি	হ <mark>য়া ধর</mark> ায়	1	
মূচছ বি	াত হলো প্রায়,	কেবল	<u>েপ্রমের</u>	দায়,
	স্বৰ্ণ কৰা ধূলায় (লোটায়।।		
বিকীৰ্ণ	কবরীপাশ,	শিথিল	হয়ে ছে	नाम.
	ঘনশাস বহিজে	প্ৰবন।		
শোকা	নল জ্বলে চিতে,	না পারি	देशरा श	রিতে,
	বিরহেতে হইল	বিকল ॥		
কিছু ক	ল পরে সতী,	বলে কো	ाथा खान	পক্তি
•	স্বপ্নে আদি নি	ल परमान	1	
এবে ৫	পয়ে কোন দেখি,	অবল	র প্রতি	রো 🕠
	করি কেন বধিছ	जीवन।।		
कि मिर	ां किवा शामिनी,		ব পিপা	সিন্
	ভোমাবিনা কে	আছে অ	ামার।	
वल (इ	স্বশ্ববিলাসী, এ	a পিপাস	কিসে	नर्1्
À	বিশা তব প্রেম			** * 2
কলঙ্কী	যে স্বধকর,	खी बदध	করেন	

व्यक्तराज जेमादित गद्भन ।

۲

बिटक (भेष्डांटर मनन, जोट्न दम मटह मनन, বিষবায়ু বহিছে অনল।। মেঘ ভঙ্গ আদি যত, সং গক্ত ম্সুগত, তব িহু অধিক প্রবল। **७** त्व या मम ज्वन, कदिए तिह नश्नेन. নাথ তব বিরুহে কেবল।। ভব প্রেম পারাবার, যেগিনভবি আমার, উঠিয়াছে ভাষাতে ভাসিয়া। এই ছুংখ উপজিল, তব কলঙ্ক ব্যথিল, জনাথিনী প্রাণে মতিয়'। विमिश्र जामात शारम, स्थामम शिवलारम ज्वित्त (इ श्रु अनुदृन: এবে কেন প্রতিকূল, গ্লাম্ট শাস সম সুল, হয়ে মোর ভাসেনে চুকুল । প্রাণ আছে ভব কাছে, এই হেতু দেহ আছে, যদি দেহে থাকিত আমাব। ভবে নাথ কি করিভে, কে রাখিত কারে দিতে, এ ছুক্ত বিরহ ভোষার॥ **এই बल कारम छेवा, क्रांम मात्रि प्राची छेवी,** श्रीरंकारम इत्लन केन्छ। स्बब्धारट नीत, शिक्ट यन मिनित, নিবাসেতে বহিল বলয়।। কাক ডাকিয়া উঠিল, বেন সঙ্কেত করিল,

विश्वम विमामिनीगरन।

চলিল যত যুবতী, সন্ধাকিলে যেন পতি, ठळवांकी ना (मर्थ नग्रतन। বিহল্পে করিল রব, জাগিল দম্পতি সব, বাতুলতা বন্ধন থসিল। মলিন করি কিরণ, ছাড়ি কুমুদ্িনীগণ, শশী অন্তাচলেতে চলিল।। क्रमूम मूमिछकावी, महस्र किंत्रनशाती, भूक्विकारण कर विखातिहा। পদ্মিনীর পদ্মানন, করিতে যেন চুম্বন, मुखावाम पिछ्न शुनिशा।। পাইয়া অলোক লোক, অন্তরে হয়ে পুলক, गृह इट्रेंट द हिंदू इट्टेल। नुकारेल दाहिएत. अक्रीनिश श्रीसन्दर, দিবাচর নগর ব্যাপিল।। প্রভাতা হল বজনী, নিদ্রা তাজি মুবদনী, চিত্ররেখা উঠিয়া বসিয়া। (प्रशिल ताजगिन्नी, (यम के कां क्रांलिमी. কান্দিতেছে ধূলায় পড়িয়া॥ भारतीत्रकृतमात्रमा, छ्य विश्वक वनमा, চিত্রবেখা ছইয়া তথন। বিগলিত কেশবাসে, ততত আসি উষ্পালে.

· ভিজশাম জিভাবন কার্প।

জিজাদা।

বল বল স্থি ছঃখিনীর মত ফেন বসে ধরাওলে। কিসের অভাব মনেতে করিয়া ভাসিছ নবনজনে।। वमन जूरन निथिल इरहरह पूला लागिशांटक गांध। ভোমার এ দশা ও রাজকুমারি নয়নে কি দেখা বাল এ নং হোবদে না হইল বিযা তাই বা ভেবেছ মনে। छेठे हाँ प्रमुखि कोलि पिव विशे बिलशो बोख जलता। মনোমত পতি আমি দিব আনি সত্য এ বচন মেবু ! শশির কোলেতে থেলিবে কুমুদ স্বথের রবেনা ওর।। निरं श्रांगनार्थ कारह दाथिया यूड़ार ब्यान गथन। সফল নয়ন করিব তথন এ পণ ছবে পুবণ ।। উঠ উঠ উঠ ও চাৰুনয়নি কেঁদনা কেঁদনা আর। রাতি পোহারেছে লোকে দেখে পাছে মনে করে কিছু গাব সুকথার যশঃ ভুবন মাঝেতে অনেক যুত্তনে ঘটে। कुकथा इटेटन घाटि मार्ट हार्ट मवात मुर्भटक तटि ।। যেমন তেমন ঘরের না হও রাজার ঘরের মেরে। শক্ত সৰ আছে কি জানি কি বলে ভোমার এ ভাব পৈংয ছিছি মেনে ইকি পাগলিনী হলে এ কথা বলে উষায়। इंडल इंडेएंड क्लिल दमारेश खाँकाल मूथ मूक्ति॥ अभिशं बहरू बिखारम छेवादा कुद्वां ध निक्रनी भीता ! किलांगितः काम्य दल दल दल आंगात माथात कीता ।। इन मां करिया मंडा त्मारित वल मरमत किवा मनम । ভেলার শণাৰ কারে মা বলিব সাধিব তব সাধন !!

मशीत काम शास स्वननी नियाम ছाডिয়ा वला। ওলে। চিত্ররেখা কি স্নার বলিব দহিছে বিরহানলে।। নিশি অবশেষে ছিলাম বুমিয়া সপলে আদিয়া চোর। লেব কি ম: নব নারিতু বুরিতে পরাণ হরিল মোর।। পরি ধরি করি ধরিতে না পারি অংবেশে শরীর ভার! ৰ্কি গুণ করিয়া অদর্শন হল দহিছে দেহ আমার । কিবা মলেছের মধুর মূর্ভি পিনীতি স্কার সার্ ত্রিভূবন মাছে তেমন দেখিনা ডপমা কি দিব ভার।। বয়সে নবীন মনোহর বেশে অতি সুমধুর রূপ । দেখিলে শীতল প্রাণ মনো হয় বড়ই রদের কুশ। মুথ শতিহৰ নয়ন খণ্ডান জা যেন জ্বয়প্রতি। আধরের রাগে প্রভাকর হারে বান্ধুলি কি ধরে ভাঁতি 🛭 ত্বলিছে রুগুল গৃধিনী নিন্দিত মনোছর ক্রতিমূলে। জ্ঞান হয় থেন শক্ষিত ছলেতে ডাকিছে, ক্ৰমিনীকূলে 🖟 অজাসুলম্বিত বাহু করিকর প্রভাকর করতলে। রমণী হৃদয়সরোজ দলিতে গড়িল বিধি বিরলে।। - বসভ রসেতে হাদয়ভাগ্ডার পূরণ করেছে কাম! द्यम् कालक्वी मृति ध्यकानिशं आन्तरं जालनशाम ॥ नामकर्तनवर विकनी वजन भरषा ध्यम मामिनी। त्म तथ एमथिल युनि यन हेल कि ছाর क्लकामिनी।। **ट्रम क्रथ (मृद्ध अदनाव मृद्य क्रम्म देश्र अ शद्य ।** • नुसून (छिमग्र) अपरास श्रीमा श्रीमा नरसर्छ **र**द्ध ॥ श्वमत आभात शांचान त्य नेत एटेहें तम अथन आएए। कूल भील मान या किছू वल जवन धारित भी है।

তাহার বিরহে দহিছে শরীর মনে কিছু নাহি লব।
সতত সে রূপ জাগিতেছে মনে কি রূপে অবলা রর।।
কি জামি কেমন করিছে শরীর দাহুন কামের শরে।
ধিকি ধিকি করে ক্রন্ত দহিছে কি রূপে থাকি লো গরে।।
মনের বেদনা সেই জন বিনা বল কে নাশিতে পারে।
হিয়ার মাঝারে খেনত হইছে সে কথা কহিব কারে।।
তারে না পাইলে জীবন ছাড়িব শুন ওলো চিত্ররেখা।
প্রেহ যদি থাকে তবে তারে আনি করালো আমারে দেখা
শুনে শ্যাম বলে শুন বিনোদিনি সুখ ছুঃখ ছুটি ভাই।
স্পথের লাগিয়া যে করে পিরীতি ছুঃখ যায় তার ঠিই।।

गशी छेकि।

উষার বচন শুনি কাছে চিত্ররেখা।

দে জনে কেমনে আনি ক্রাইব দেখা।

দে জন পুৰুষ তুমি হও যে রমণী।

এ বড় বিষম কথা ও চাঁদবদনি।।

জীজাতি বিষম জাতি দোষ পায় পায়।

কেবা অন্যেতে যেন শুনিতে না পায়।

দিন তুই থাক সহে হয়োনা ব্যাকুল।

কুটারেছে বিধি তব বিবাহের ফুল।।

রাণীকে বলিব সখি কালি দিবে বিয়া।

আমিয়া সুন্দর বর জগত ছানিরা।।

পাবে পতি মনোমত ওগো রাজনালা।

কীৰাইবে কামানল রবেনাক জালা।।

পতিমুখ শ্বধাকরে হয়ে চকোরিণী। পীষ্ষ করিবে পান দিবস যামিনী॥ নিজার আবেশে কারে দেখেছ নয়ন। তার লাগি ভাস কেন নয়নজীবনে।। কিবা নাম কোথা ধাম কার সে কুমার। -কি রূপ আক।র কিছু জামিনাক ভার।। ্কি রূপে চিনিব ভারে কি আছে উপায়। ভারে মিলাইতে বল এ যে বড় দায়।। তাহারে বরিবে তুমি করিয়াছ পণ। বুর্নিলাম তোমারে গো স্মরেছে শমন।। আপনি মজিবে আর আমারে মজাবে। জীবন থাকিতে মা বাপের মাথা থাবে।। মনে ভেবে দেখ স্থি তুমি বা কেমন। তোমাকে কি শোভা পায় করিতে এমন।। বাহুবলে বিদিত ভুবদে তব পিতা। তাহার কুমারী তুমি লোকের পুজিতা।। তব পিতৃকুলকীর্ত্তি পুকুল সমান। দিওনা তাহাতে স্থি কালির নিশান।। গোপুনে প্রেমের ভাব ছাপা নাহি রয়। যেমন ভাসু উদয়ে তমঃ পায় কয়।। গুরুপ্রেমে স্থালাভ করা সে বিয়ম ; স্থায় গরল উঠে হলে তর্তম।। গোপনের প্রেম সই প্রকাশিলে পরে। কলক গঞ্জনা তারে দের ঘরে পরে।। তাই বলি সুবদনি এমন ফাজেতে। যেওনা যেওনা ইছা করোনা মনেতে। শুনিয়া সধীর কথা উষা রূপবভী। সজলময়ুৰে বলে করিয়া মিনতি।।

শুন শুন ওলো স্থি আমার বচন। তীহার মিলন বিনা না রহে জীবন।। দহিল জীবন যদি বিরুহ অনল। তবে লোকলাজে স্থি কি ক্বিবে বল।। দিবানিশি সেই রূপ জাগিতেছে মনে। কেমন করিয়া বল ভূলিব সে জনে।। অবিরত মম মনঃ পোড়ে তার তরে। এত ছঃখে বল কলকেতে কিবা করে।। তাহার বিরহে স্থি রহিতে না পারি। কি রূপে পাইব ভারে বলনা বিচারি॥ `বিফলে এখন যদি এ যৌবন যায়। কি করিবে বল শেষে বিবাহে আমায়।। তক্ষায় এখন যদি চাত্ৰিনী মলো। প্রারটে বর্ষিয়া মেঘ কি করিবে বলো।। তানিবারে তারে সথি যা লো তুরা করি। বিলম্ব করোনা সই পারে তোর ধরি।। শ্যাম বলে এ তোমার নহে পায়ে ধরা। এ কেবল দাদীকে পিরীতে ব্রতী করা !৷

পুনঃ দখীর উক্তি।

উষার বাস, শুনিরা তথম,
কহে চিত্ররেখা হাসি।
একথা কেমনে, আনিলে বদনে,
আমি গো ডোমারি দাসী।।
এ যে বলিলাম, মনঃ বুরিলাম,
হওনা মনে উদাসী।

এরপ কথার, হয়েছে কোথান ঠাকুরাণী ছাড়া দাসী!! তব সুথে সুথী, জেম বিধুমুখী, (यमम ७क्ट मृत्ल। সলিল প্রদানে, আপ্রমাকে মানে. শীতল পল্লবকুলে॥ ওগো রদবতি, তুমি পাবে পতি, ভাতে কি হুঃখ আমার। এ মুখ ছইতে, কি ভাল বাসিতে, বল স্থি আছে আর।। মন্মথ সাগর, তুফান বিস্তর. তুমি গো নবীনতার। কি রূপেতে পার, ছবে তুমি ভার, এই ডরে মনে ডরি॥ ওগো রুমবভি, পিরীভির গতি. **७८व मिथ मिथि एटि**। পিরীতিসাগরে, পড়িলে কি পরে, উঠিতে পারিবে ভিতে।। গোপন প্রেমেতে, ভাল প্রথমেতে, পরেতে পরাণ ফাটে: শাঁথারীরগণ, করাত যেমন, আসিতে যাইতে কাটে॥ কুলবভী হয়ে, পিরীতি কর্য়ে, এমডি ঘটে যে তারে। ८गरतत जननी, यमम जजनिः कुकाद्य काषिएक माद्य ॥ প্রেমের এ গতি, আছে রসবতি, रदाना मरन का कुल।

यित मा अमिरत, में में का कास्मिरत, পাথারে ভাসিবে কুল।। বিশেক কি রূপে, ঘটে চুপে চুপে, हेश (य भटन ना लग्न। কি রূপে ভোমারে, আদি দিব ভারে, মনেতে হতেছে ভয়।। এ যে অন্তঃপুরী, যেন যমপুরী, রাজা যে দিতীয় যম। দারপাল যারা, ভয়কর ভারা, যম হতে কত কম।। হেন দার দিয়া, কি রূপ করিয়া, আনিব পরের ছেলে। তুমিত না পাবে, মোর মাথা থাবে, কিবা হবে তারে মেলে॥ विश्विष खन्नात्र प्राप्त करन, কেমন বা সে মুরতি। এ विषम मात्र, किलिल आंगात्र, আনিতে স্বপনপতি॥ ट्य जारमना गारत, व्यामिनारत जारत, পারে কি কথন মরে। ভোমার এপণ, করিভে পূর্ণ, मा शांद्र दुवि जगद्र ॥ च्छित कत मनः, स्ट्रेटव भूतन गरमत याहा मनम। डेउना इटेरन, जांस कि भी भीरन, এক জ জেন জেমন। স্থীর বচন, শুনিয়া তথ্ন, ं अञ्ज्यूशी खेवा बरन।

কি আর বলিব, শবীর ছাডিব, शाम करत इनाहरल !! कांगिलाम मात्र, कशांत छेवार. না লিখেছে বিধি সুখ। তে মা বিমা বল, কে কবে সফল, আর চাব কার মুখ।। কোন সুথ আশে, থাকি এই বাসে, কছ না স্থি বিচারি। বেগবনের ভার, কভ সব আব, কত বল ধরে নারী॥ এ সংসারে আর, সমান আমার, কে আছে চিরত্বঃথিনী। धिक এ कीतम, धिक द्र मनन, ধিক ধিক অনাথিনী : এই কথা বলে, ময়নের শ্জলে, কমল দেহ ভাসিল। বিরহবিধুর', দেখি স্কৃত্রা, विवद्यं काल निम्। वटल स्वनटन, इंशांत कांतरन, কেঁদ না কেঁদ না আর। অবশ্য সাধিব, তারে যিলাইব, এ বচন জেন সার।! व्यक्तित्व नभी, व्यक्तित्व क्रमी, ্ঞ দাসী ভোমার পারে। আদিতে রতন, লাগে কতকণ, यशिया मागृत भारत। জেন ভূমণ্ডল, দেবত সকল,

গ্রামণ ভাহার, কুন্তীর কুমার, ধর্মপুত্রে লোকে কয় !! ইহার উপায়, বলি গো ড়োমায়, পুজা কাজায়নী পায়। **(मथ ज़न्मांवरन,** (शांभ दार्माशर्पन, কুষ্ণ পতি তারা পায়।। রক্ষকুল অরি, পুজিয়া শকরী, রাবণে করেন ক্য। •• .. ভীম্মকবালিকা, * আরাপি অন্থিকা, কুষ্ণের কামিনী হয়।। তার কুপা হলে, শিলা ভাসে জলে, অসাধ্য হয় সাধন। ওগো সুবদনি, পুজ কান্তায়নী, অবশ্য হবে পূর্ণ।। শুনে দে বচন, উষার তথন, যেন এলো প্রাণ ফিরে। সজল নয়নে, অমিয়া বচনে, वरल धनी शीरत्र ॥ হাঁলো চিত্রেখা, পাব কি লো দেখা," देश या गरन ना लग्न। তুমি তার মূল, হয়ে অনুকূল, যদি পার তবে হয়॥ नहिटल **डे**यात, माहि प्रिथि शीत, এ ত্রংখেতে স্থি আর। रम रना खूरी कति, शूंजिय गुकरी, ভায়োজন করি ভার।। শ্যাম শুনে বানী, চিত্রপট আনি, উষাকে দিল তথ্য।

কর যোড় করি, পূজা সাক্ষ করি, প্রকাঠন স্বীর মনন।

विश्व छव।

कत य फ कढ़ि खेंबा का मित्रा का मित्रा। কহিছে দেখার কাছে বিনয় করিয়া।। ওগো শিবমনোর্মা কৈলাসবাসিনি। निवक्ष निवानी स्निव अमायिनी ।। जुरनशालिमी शक्षि मःशांतकातिनी। সংশয়ৰ শিনী শিববক্ষঃ বিহারিণী । চন্দ্রমুখী চন্দ্রচুড় চন্দ্র চকোরিণী। एखाकः थ হরा नामा एखाई शातिनी।। ু ভূগরতনয়া ধরা চুস্বিত কেশিশী। ধুমাবজী ছিল্পমন্তা শাশানবামিনী।। থর্থজাধরাপরা নুমুওমালিনী। सूरर्वदर्ग एडा जाकागरामिनी।। বাসু-অগ্নি জলাকাশ ধরিত্রী ধারিণী। ত্রিনয়না সহস্রাক্ষি ফণী বিভূষিণী।। হৈত্রবী বগলা ভীমা ভীষণভাষিণী यांगिनी दिखिजा मक्तरक विनानिनी।। দৈত্যপত্নী মুখপদ্ম মুদিতকারিণী। । ব্রিপুর কুলিশ ফদি ত্রিশূল ঘাতিনী।। রক্ষক্লান্তক রিপুকুল সংহারিণী। ছফীনল পলিতাকি ভূভারবারিণী। युक्तत्र रहिती युक्त कुर्गाननी। क्कारीमा जगरजी मुक्तिथा शिमी।।

কৃতান্তভয়বারিনী ত্রিতাপনা निमी। ' ব্ৰছগোপবালা কৃষ্ণপতি প্ৰদায়িনী।। ভীমাকত্বহিতা করকমল প্রজিতীয়া মহামায়া যোগেশ্বরী ত্রিলোকবন্দিতা॥ 'অজ্ঞানরমণী আমি কি বলিব অ(র। যা বলাও তাই বলি কুপাতে তোমীৰু॥ वीनाभादी य मनशी मत्नव मनम। বীণাতে প্রকাশে বীণা না জানে কারণ।। মম জিহ্বাবীণা তুমি হও বীণাপাণি। যা বলাও তাই বলি কিছুই না জানি।। স্বপ্পপতি পতি মোরে দে গো শুভঙ্করি। म विना जिश्रेत अत्मा माहि वाक्षा कति॥ विनाम मकम मा (भा मांभीत राजना। হেরিও অপালে এক বার ত্রিনয়না।। উষার শুবেতে দেবী সন্তোষ পাইয়া। বিমান বিমানে থাকি কছেন ডাকিয়া।। শুন শুন দৈতাকুলপতির ভদয়ে। পাবে তুমি পতি রতিপতির ভনরে ৷৷ যেই তব স্বপ্নপতি তার বিবরণ। विनव मक्न विज्ञात्वेशीत महम्।। সেই ভব পূরাইবে মনের বাসনা। शांख वानवर्ता व्यात (कॅमना (कॅमना ।। रेनववानी स्टाम धनी श्रमूल अंखरत । করেতে পাইল ফেন পূর্ণ রুধাকরে।। कानिहा मस्मा भूगे हत्ना मनकाम । कत्रत्यां कि दनवी शटन कतिल क्यानां म শ্যামের নিকটে উষা আসিয়া অপন্ আসন্দেতে করে দোঁতে কর্মেশবার্মর 🕕

अखागा।

চিত্ররেখা বলে স্থি कি বর পাইলে। উষা বলে পাব বরুসে বর পাইলে।। . সথী বলে বুঝিলুম নাই তাঁর দয়।। উষা বলে ক্লো আছে ছাড়া তাঁর দয়।।। স্থি বল তবে কেন ছংখ নাহি ছাড়ে। উষা বল্ল কর্মপাকে ফুঃখ নাহি ছাড়ে। স্থী বলে সভা তবে কর্ম্মই প্রধান। উষা বলে সভ্য তাঁর কর্মাই প্রধান।। চিত্রবেথা বলে স্থি এ সকল মায়া। উবা বলে যত দেগ দব তাঁর মায়া॥ স্থি বলে ভবে কেন কান্দ ভার ভবে। উষা বলে কান্দি মায়। বশে তার ভবে।। হাসি বলে চিত্ররেখা সে মাধা কেমন : উষা বলে জেন স্থি সে মারা কেমন।। "উভয়েতে এই রূপে করে আলাপন। . এদিগে অচলে ভাতু করিল শয়ন। यौतिनी मालिनी जासू मृतिज प्रिशा। পুर्वकारलं रूख केंद्रे यूथ विखातिया।। मीर्शिष्ट्र माथा दमनी शूर्व निमाक्त । शिमिए जामिए सम विवृहिनी कर ॥ হাসিতেছে উল্লাসেতে যত কুম্দিনী। इः स्थरक मिलनी कार्य रख्यक मिलनी।। উডিল মধুপকুল ছাড়ি পদাবন। পদ্মিনী কুলের যেন উঠিল রোদনী রাত্রিচরে আসি দিবাচরে থেদাইল চক্রেবাকী চক্রবাকে ছাড়িয়া চালিল প্রিয়াশূন্য চক্রবাক স্মরকুর মনে। प्रतिष्ठ कमलानाइ होट्स फरन फरन ঢাকিয়া অর্জেক তান জলদ বসলে वांत्र मिल वांत्राभमा वाहित ভवरम । निधुवनविलामिनी कामिनी निकरतः क्रिंडिए प्रदिश मर्शन क्रि क्रेंड । বালাবধূ পতিভয়ে শক্ষিতা হইল। युवजीत मरल मृथमिक् उथिलिल।। मञ्ज घन्छ। काश्माद्भव छेठिल मन्मिट्द । मझीटा दाणिए जुडी खबन.मस्टित ॥ त्भार्भाल (भारताल लरह गाइल ७वम। আপৰি তাপৰ বাজে আপন আপন। विद्यानी थुकिएइ वामा द्याकारन द्याकारन ॥ क्षाठीत समिद्ध मत्यामा समिद्ध कार्य ॥ এই্রুপে ক্রমেতে সবলা বিভাবরী। भूग्रम कतिल छेया मह महत्री॥ निर्माति वानिया वारित हरे करन । চিত্ররেখা প্রতি দেবী কছেন অপদে।। **अन विद्यार्थों अ यदश्चत्र विवहन**ी **ज्य मो कतिह मरम हरेरव श्रीतंत्र !!** .

দারাবতী নামে এক আছিয়ে নগর ! जात क्जूर्सिंग कार्त्री दरहरक मांगत ।! সে নগ্রপতি কৃষ্ দৈনকী কুমার। তথার বাইতে পারে ছেন শক্তি কার।। তার পুত্র কাদ ত্রিভুবনে ছর্নিবার। जिल्क् की वीत दाशत कुमात ।। त्मुक्कामि डेगांक खगरन प्रथा पिन। ত্রোর লাগিয়া উষা আমাকে পূজিল।। এই লহ মন্ত্র এক দিলাম ভোমারে। এই মন্ত্র বলে তুমি আনিবে তাঁছারে।। চিত্ৰপট লিখনেতে হবে কুশলিনী। স্ফেছাধীন শূন্যপথে ছইবে গামিনী। এই বলে মহামায়া করিলে গমন। পূর্বভাগে দেখা আসি দিলেন তপন।। স্বপ্ন হেবি চিত্রবেখা উঠে চমকিয়া: উষারে বলিল স্বপ্ন তথ্য বিবরিয়া।। च्हान होया वरल मिथ कि कथा विमाल । বিশামূলে একেবারে আমারে কিনিলি।। উথলিল শুনে মোর স্থপারাবার। চিত্রে লিখে দেখা ভারে দেখি একবার।। क्रकुता विवास्त्रथा स्टरन रम रहन । ছলিতে উষার মনঃ ভাবিল ভখন।। ৰারাবতী বিদা ভূজী বিভার করিয়া। একে একে मिश्री किलाक किथिय।।।

তার মাবে৷ না দেখিয়া উষা নিজ পতি আকুল হইয়া পুনঃ কহিছে ভারতী।। करे मिथ (म जात मा प्रिथि कि कार्रिश। বুঝি:লো উষার পণ না হয় পূরণ একে একে যত লিখে করিলে বিস্তার। যার লাগি মরি প্রাণে নাহি তারাকার ট্যার মুখেতে সথী সে কথা শুনিয়া भटन भटन नटल छोट्ड थनावांन मिला। शांत करण यांत क्रश फिरांनिनि जारग। ভাষ রূপ বিনা কি ভাছার মনে লাগে।। যে হেরেছে শারদীয় পূর্ণ নিশাকরে। সেই চন্দ্র বিনা ভার না লাগে অন্তরে॥ क्षत्र क्षत्र शहरा । श आभारत रहन । कार्याच (मतीत राका मां स्टा थलम ॥ এই বলে দিজ শ্যাম অন্তরে ছাসিয়া। लिथिएएए बार् रेडी विखार करिया।

চিত্ৰপট।

প্রথমে লিখিল সিমু, ভার মাঝে লিখে ইন্দু, সমপ্রভা ছারিকানগর। চৌরিগে বেক্টিভ বন, শোভা করিল যেমন, প্রিরি মধ্যেকে শশমর।।

छात्न छात्न महावत, निध्य किवा महन्द्र, ভরুত্র থেলিছে যেন নীর। ছুঃথে যেন হয়েছে অস্থির।। मारतः विदय शद्यभरत, दलांटन त्यन ममीतरन, गधु आरम मधुश छेफ्टि । व्यर्भ इत्र कगलिनी, इट्रेश (यन गानिनी, इक्ष्मार्थ विभाउ ना पिर्हा। তীরে লিখে পুষ্পাবন, ফুলে করিছে শোভন, ফুল মাঝে লিখিল ভ্রমরে। যেন ভীর পুষ্পাবন, দেখিতে সে সুশোভন, गांत्रम मांत्रमी मान, इश्ममान इश्मीणाल, থেলিতেছে প্রফুল্ল অন্তরে। ट्रिंग वांधा हाति घांहे, श्रवात्न कड़िल वांहे, সোপানেতে মণি প্রভাকরে॥ নানা বৰ্ণে তৰু লিখি, তহুপরে লিখে শিখী, নানা পক্ষী উড়িছে ৰসিছে। লিখিলেক পশু সৰ, 🦠 পত্নীর রুলরব, र्यम अक हिटलंड श्रमित्ह ॥ চুৰিত ধরণীতল, পাদপশাখা সকল, निशित्नक कन कून छत्। कतिवादत कल मान, यम हक्क नखगान,

रहेबाट्स भिवटकत्र जटत्।।

ra1

পরে লিখে বাসস্থান, । विश्वकर्माর निर्मान, विश्वकत्री विकित्त त्रक्रमा। ইন্সালয় কত শত, হুয়ে আছে অনুগত, লইতে শোভার এক কণ্।। পরে লিখে যগুপতি, স্বস্কু হর মূরতি, রপেতে বিজয়ী কাদছিলী वार्य निश्चिम क्रिनी, कांश्रममात्र मेर्न्सनी, महादमर्घ राम रमीमामिनी।। তাঁর পুত্র ফুলবাণ, যার বাণ ফুলবাণ, ভীতা হয়ে লিখিলেক তাঁরে। माहि पिल गरामम, क्लाम अविश्वामी जम, विवृहिनी (मथित्र। देवाद्व । डेव! वटन फिलटंतथा, नम क्रश थांत्र प्रथा, किया दुक किया त्ला यहन। এ নারীর কুলনাশা, ্রমুখে তরু নাই ভাষা, मधी वटल अहे तम महम ॥ স্কুচতুরা ভাবি মনে, লিখিল অভি যতনে, রতি সতী পতির কুমারে। পিতৃষ্টে ধনবাৰ, আৰি দুভী ধসুকীণ, 📖 ্করে মিয়ে দেখায় উষারে।। व्यक्त स्वेद्ध स्वक मिन, अमिन रान शूकिन, विटक् शिक्ष जीवम (यथारन) উর্থলিল প্রেমাকুল, নাশিল জানের মূল े देश देश कांद्र साहि मारन।।

घास्तु र को सं सूर्य, भिन्न इरेन सूर्य, ছই দেজে বস্থারা বছে। ়বিরহ বাড়বানল, হয়ে উঠিল প্রবল, চিত্ররেখা প্রতি উষা কছে।। হেঁলো সুথি কি করিলি, কি আমাকে দেখাইলি, क्मिन कदिए एम मनः। জাশিতে আমার প্রাণ, শত্রু হাতে ধসুর্বাণ, मिरत त्याद विधिन जीवन ॥ অন্তর ফুটিল যার, 🔧 সরুদে দেখায় ভার, এডাদুশ জেন তার গুণ। প্রেমকে বলি অজ্ঞান, তার অঙ্গে লয় স্থান, कुलनाती वधरत निश्रन ॥ मध्य मिट्ड वम्रात, हिन्द हो कि नम्रात्म, প্ৰাইল মাতিল মদন। হইয়া চিত্রপুতুল, করিল মোরে আকুল, मा জাদি লো সেই বা কেমদ।। याटक (मटथ आर्ग गांस, जाटक मनः मना हांस, কিবা গুণ জানে বুৰি। সই। দেখিয়াছি যে অবধি, বারে আঁখি সে অবধি, তা না হলে সারা কেন হই।। বলিতে বলিতে ধনী, ব্যাকুল হয়ে অমনি, দেত্ৰদীয়ে ভাসিতে লাগিল। मधी यम बूट्य जांत, वरम क्लामा भा जांत ভৰ্ব হোৱ ধরা বে পডিল।।

উঠ ও तांखनियनि, थेछाडा इःश्वामिनी स्टबंद मिवम (मथ (हट्स) क्या क्या व्यात, अहेथारन तृथा जात, পাবে তুমি নৃপতির মেয়ে॥ এই বলে নেত্রবারি, স্বীয় গ্লঞ্চলে নিবারি, मामा अर्भ धारति । केरावा वरल द्वःथ हरला (भय, वांगरतत क्य caria निवांमत्म क्वम भा धवां है।। আর কেন কান্ধালিনী, সম আছ বিনোদিনী, অদ্য পতি পাইবে নিশিতে। वाश्वित्राविमुक्त दिशा करित्रा माहिनी दिशा বদে থাক ধৈৰ্য্য ধরি চিতে।। সিঁতী কিছিণী কৰণ, বলয় পদভূষণ, হারে পরোধর শোভাকর। - তপ্তকাধ্যন বরণে, ঢাক জলদ বসনে, र्ভाटन हम्मटनत है। এই বলিয়া উষায়, মোহিনী কেল সাজায়, ' क्रम्क्रम् वन्तन व्यक्त मिया। ধরিবারে পতিচাঁদ, পাতিল মোহিনীফাঁদ, शब्द्यी वांमद्र विम्या।। া কর্পার চন্দন চুয়া, কুলমালা পাণ গুয়া,. भान मिछ जीवन ताथिल। नामत्र माजादत्र नागम, शूताहरक ममकाम,

अभिकृष्क आनिए हिल्ला

ছারিকা গমন।

ছর্গা বলে দেবীদক্ত মন্ত্র করি মনে : মছাবেগৈ চিত্ররেখা উঠিল গগণে ।। দারাবতী অভিমূথে বেগেডে চলিল। नम नमी रेमल शाम अरनक छांजिल।। চলিল মটেনির বেগে পবন জিনিরা। নিমিক্রেতে ছারাবতী উত্তরিল গিয়া॥ দেখিল প্রহরীচক্র আছে সুদর্শন। অরিপুর স্বদর্শন রিপুর শমন।। ভাবে দৃতী মনে মনে উপায় কি করি। উপায় করিতে আজি প্রাণে পাছে মরি॥ ইহার বারতা যদি আগে জানিতাম। তবে কি এমন কাৰ্য্য স্বীকৃতা হতাম।। না বুঝিতে পারিয়া দেকের মায়া ফন্দি। ं शपपड़ी भटन नहा इरेग्ना हि बनी॥ কি করে বা প্রবৈশিব নগর ভিতরে। কি করে বা সাধি কার্য্য ইছার গোচরে 🛭 এ বে মহা ভেজকার দেখে ভার লাগে। বজ্রবাশি কাটে যদি পড়ে এর আগে।। ইহাকে লভিষয়া আমি কি রূপে যাইব। পরের লাগিয়া কি আপনা বিনাশিব।। জীবন হইতে ধন আর কিবা আছে। য়ত কিছু বল সব জীবনের পাছে !! · হলোনা হলোনা পণ উষার **পুর**্বি 'কি রূপে রাখিব আমি উষ্টর জীবন।। বাসরবাসিনী সে যে পতিত্ব আঞ্চার উর্বুধ করে আছে চাতকিদী প্রাষ্টি।।

কি রূপে কহিব ভারে দাকণ বচন। श्रवित्रहिनी तम त्य खटन हाफ्टिव जीवन ॥ এবার উষার প্রাণ কি দিয়ে রাখিব। কথায় যে আর ভারে টালিভে নারিব।। वाजाव क्रमावी अक्रमावी तम ललमा। নাছি জানে কথন এ বিরহ্যাতনা।। আমার সমীপে স্থী ৰুছ যে কান্দিল। বিনয় করিয়া মোরে কডই বলিল।। কোথায় বৃহিলে মাগোঁ কৈলাসবাসিনি পতির লাগিয়া উষা বড়ই ছঃখিনী॥ ভোষার আদেশে আসি অকুলের কলে। প্রাণ যায় রক্ষ গো শক্ষট অভুকুলে।। এইরূপে ভাবে দুতী আকাশ উপরে। জানিলেন চক্রধারী প্ররের ভিভরে ॥ বিশেষ দেবীর বাক্য এই ভাবি মদে। সংগোপন করিলেন ছাসি স্বদর্শনে !। সুদর্শন অদর্শন সহসা হইল। महारमण्य बङ्कामल रयम जुकारिन ।। **विजयतथा टमरे क्रश महत्म देमिशा।** মনে মনে চিন্তা করে বিশ্বয় ছইয়া।। वटन यादा किथिनाम आछन आकात। পরে ভারে দেখিতে শইল নিরাকার।। द्विलाग अवीत किइती छावि गरम। বিশেষ করিয়া মনে সম্ভেশ রাজনে।। द्वि अपर्नम लक्ष अभि शाद्र छिल। मत्नरक कतिया जारे बुक्ति मुकारेल ॥ এই বলে দেখীপদ ভাষিয়া অন্তরে। লিনিবে আবেলে পিয়া শাসর ভিডরে॥

উষানাথ আশে দূতী খুজে খরে হরে। কামকুমারের ঘরে উত্তরিল পাঁরে।। দেখিল শরনে আছে কামের কুমার। অমনি করিল মারা মন্ত্রের বিন্তার।। মন্ত্রের প্রভাবে ভারে আকাশে তুলিয়া শোণিতপুর্যুরতে শাস চলিল লইয়া।।

উৎকৃতিতা।

এখালেতে বিদোদিনী, नववांत्रक वांत्रिनी, উষা দৈতাপতির ছুহিতা। मृछी मधी जागगरम, विलक्ष (मथिय़) मरम, ভাবিতেছে হয়ে উৎকণ্ঠিতা।। वाल मधी मा आहेल, दिवाद थान महिल, আর জ্বালা সহিতে না পারি। পিকের পঞ্চম স্বর, যেন মিষ্মাখা শর, কত সবে বিরহিণী নারী।। ডাকিছে মধুপকুল, কাণে যেন হানে শূল, মনসিজ অন্তর পাড়ায়। क्रम्क्रम् एन्सन हुत्रा, कूलमाना शांव छत्रा, े अंद गर इत्ना विष श्रीय ॥ किहिनी कहन हात, सूर्श्तीमि जलहात, , राह भारत मध्यम कहिएह। मनत शितित वाह, जार्थ जम् बाल वाहर শালী বিষয়পুলি বিভারিটছ ॥

কৃষ্ণের দারিকাপুর, শুনিয়াছি বহু দূর, বুঝি সধী ঘেতে না পারিল। किन्त बांब्रशालगर॰, दमरथ छत्र दशर मरन, मा जानि कि फिर्त वा जाहेल ॥ ' নিশি প্রায় অবসান, আরুল হতেছে প্রাণ, मा शृतिल मरमत राजमा। 🕏 এবে কি করি উপায়, কিসে প্রাণ রক্ষী পায়, কে নাশিবে বিরহ্ যাতনা।। এইরপে বিনোদিনী, নব বাসর বাসিনী, ভাবিছে কপালে কর দিয়া। अमन **मगर** प्र (प्रथा), प्रिल चामि विद्यार थी, কামপুত্রে ছর্ণ করিবা।। मूमिङ शंधानश्रम, शानरक करत नश्रम, আছে রঙিপতির কুমার। माधिएक मरमत माध, यन मात्रीधता काँग. পাতিয়াছে কাম দুরাচার।। তপ্তকাঞ্চন বরণী, দৈতামৃতা সুবদনী, প্রাণকান্তে দেখিরা নয়নে । (रामम छांजकीशन, नव दमध महानान, করে সম্ভোষিত হয় মনে।। रत्न कुछा धनिमनी, सम धरा निख्यिन বসৰতি বলি গো ভোমারে। यांद्र (मर्थक् अर्थान, श्रेट्र विज प्रवर्गन, এখন সাক্ষাতে দেখ ভারে।। শুদি স্থীর বচন, কহিছে উবা তথ্ম, কি আরু অধিক কব সই। तिरह अयुक्ता त्रंडन, किनिनि मय जीवन, ্চির্দিশ দাসী ছরে রই।।

मत्म क्रिम मा आमात, त्मश्री (ए পाইर आह, তুমি ভার হয়ে অমুকূল। माधिल प्रस्वामनी, नानिल यक याज्या, অকুলেতে মিলাইলে কুল।। **এই कथा तरल धनी,** नील शक्क महनी. পতি কাছে যাইতে উঠিল। ব্রবিয়া উষার মনঃ, করে ভারে নিবারণ, श्रमः मञी कहिए नागिन।। ष्ट्रिष्टि अकि विट्नापिनी, हत्य कृत्नद कामिनी, আপনা হইতে যদি যাবে। ব্দণীকুলের ষত, भाग मन इस्त इड, অবশেষে বড় লাজ পারে।। **एवं मरनर** विष्ठाति, शुक्रस्वत कार्छ नाही, কত বড় আছে গো মানেতে। **८इम गांम विमाणिएश, कम अएल्श**त लांशिएश, কালি দিবে কামিনীকুলেতে॥ দেখ দেখি স্বদ্দি. স্থান্থির কত বুমণী, यात लांगि जमा (भारक मनः। তরু নাছি প্রকাশে মুমন।। বিদরে যদি হাদয়, ভরু নাহি প্রকাশয়, কুলকামিনীর এই রীডি। বাহিরে প্রকাশে রাগ, মনে রেখে অসুরাগ, ক্রিয়াতে দেখার ভাবে প্রীভি।। জীবন ছাড়িতে পারে, তরু মান নাহি ছাড়ে, मान रूख आरह कि तो आता **তबिक वांचांत्र कना।, अ ऋत्य श्वरत धराधना।**. কেব ভুলা আছে গো ভোষার।।

(छामात वषम हेन्सू, प्राथिश कारमञ्जीक, छेथिलिशे छिटित इहात। তুমি ভরিবার ভরি, সেহ যদি পার করি, তবে সধী হইবে গো পার।। छारे विल मुक्तात, आंकून मा हु मत्न, शूर्व करव मरनद वामना। ভোমার যৌষন রাশি, আমি চিত্রেখা দীসী ইথে আর কি আছে ভাবনা।। ব্ৰমণীর মেত্রবাণ, বডই সে বলবান, ভার আগে স্থির কেবা হয়। ক্রডকে ভুলে মদন, থাষির রসায়শ্বন:, প্রন অম্নি স্থিয় রয় ।। বিশেষ তব নয়নে, শোভিত দেখে অপ্সনে, মদন বসিয়া ভার পাশে। আমৰ্থ পূবে সন্ধান, ধবে ফুল ধতুৰ্বাণ, আছে-জ্ঞান ছরিবার আশে।। পডिলে ছেন नशरन, हिंद ना शंकित मरन, মনসিজে ছইলে ভাপিত। তৰ প্ৰতি শত শত, প্ৰিয় বাক্য অমুগত্য হয়ে সথী হবে প্রকাশিত॥ শর্চজ্ঞ ম্যেরাননে, থাকিয়া নম্র বর্ণনে, অপাত্তে চাহিবে একবার। পাইবে পারম সুখ, স্কুচে বাবে যভ ছঃখ, क्षांन जाना ना धाकित्व जात ॥ रशाम भाग ता वहम, मथीरक करह उथम, ত্তন তৰ অযুভভাবিশি। বিলম্ব করোমা আর, 🗼 কর শীজোপার ভার, विकरसटक यांत्र स्व शामिनी।।।

পরিচয়।

खेशांत वहन एतम हिज्ञात्वर्था मार्शनिक्षा शांत किल । কাষের কুমার চেত্র পাইয়া পালকে উঠে বসিল।। लाहिक मलिनी दिकशी महत्म काशिएक कारमद वान । নরনে নয়নে পডিতে দেঁশহার দোঁহারি বিশ্বিল প্রাণ।। বিষা হুর হুর করিতে লাগিল অগরে দশম চাপে। मनम अलाम थिमल कैं। हिल जशाम खरम कैं। राभ ।। চঞ্চল হইল সুচাৰু নয়ন ভাষাতে লোহিও রেখা। • উভয়ের ভাব ব্ঝিডে পারিয়া কহিতেছে চিত্ররেখা।। কেবী তুমি হও এখানেতে কেন সভ্য কহ মহাশয়। দেব কি মানব যক্ষ কি কিন্তুর পাইয়াছি মোরা ভর।। বাণ মহারাজা শুনেছ আবণে ইন্স হারে ভয় করে। তাঁর অন্তঃপুরে যামিনীকালেভে আইলে কেমন করে॥ बादारा अहती बाह्य या जना गुगारांत्र यम जनता। **ट्रिंग कोत किया कि कार्श आहेत्ल मत्न करत हुई जाता ॥** দেখিয়া রমণী ছল না করিয়া সভা দেহ পরিচয়। আমার যে সধী সহসা তোমাকে দেখিয়া পেরেছে ভর ;; े রাজার ক্রমারী আছে একাকিনী বাসর বাসিনী সভী। अराम रागिन भरमत मत्छि इहेम्राट्ड धमवजी।। এধনে প্রহরী আছে মীনকেতু করে করি শরাসন। কার সাধ্য আছে কে পারে লইডে না হলে সধীর মঁন:।। মে ধন ছরিতে এসেছ কি তুমি ছইয়া দবীল চোর। a धनीत कारक काम दांशा जारक शाटिना कथन cota ॥ · <u>স্</u>থীর বচন শুনে যুবরাজ কহিছে ঈষদ্ ছাসি। শুন সুবদনি যে কথা কহিলে জিনিয়া মুহার রাশি।। मागत माथादत त्यह चात्रावकी कामितक मा सादत काली कराद अन्य-कारी समर्थम हम कार्र मनर्थ साम्ब

তাহারে লক্তিয়া ত্রিস্থুবনে হেন কে আছে পারে আসিতে। प्रवीत किङ्ती ভाবে গেল বুঝা এসেছ মোরে ছলিতে।। ভাল শুনিলাম কথার বলনি শুনৈ মোর ভয় হয়। আমার আলয়ে এসেছ নিশিতে আমি দিব পরিচয়॥ ভোমার যে স্থী ধনবতী বটে জানিলাম রিনোদিনি। চিয়দিন মত মনঃ প্রাণ রেখে করিল আমারে ঋণী।। त्मानात मिननी जिनिहा (जांगात मथीत मूरथत हैं।एए। ভুবন মাঝেতে ঘোষণা রাখিল কলফী করিয়া চাঁদে।। শাসিকার আগে ছলিছে মুকুতা হেম মোড়া চারি পাশে। বিজরী জড়িত যেন চাঁদকলি অৰুণ কোলেতে হাসে।। নেত্র অবিরত পূরিছে সন্ধান পুৰুষ বধের ভরে। যৌবনের গুৰু উন্নত হইয়া জাগিছে হৃদরোপরে।। সত্য কি না মিছে বিচার করিয়া দেখ দেখি বিনোদিন। মাথার উপরে বেণীর ছলেতে পুষেছ কালসাপিন।। এতেক সহায়ে তোমার স্থীর মনে যদি ভয় হয়। ভবে সুবদনে কিরপ করিয়া আমার জীবন বয়।। মোহিনী বিদ্যায় বড়ই নিপুণা ভোমার রাজকুমারী। वाकूल कविल भवां आभाव आमि निवांतिए मांबी।। শুনে রাজবালা অমিয়া বচন কহিছে মধুর স্বরে ৷ 🖰 শুন ওলো সথি কঁহিতে দে কথা এক মুখে নাহি সরে।। স্বপনে আসিয়া অবলার প্রাণ যে জন হরিতে পারে।. কেমন করিয়া বল দেখি স্থি মোহকারী বল তারে।। य जनात यस करनरकृत ज्या नाती नर्थ नाहि ज्य। কুলকামিনীরা ভারে প্রাণ দিয়ে কিরূপে ঘরেভে রয়।। व्यवनात हिटक वितर व्यवतन क्वांनि व्रक होत्न त्यहे। বিচার করিয়া দেখ দেখি স্থি ব্যাধ কি হইবে সেই।। कूरलेत ललमा श्राचारत जागाम कूमधर्म इस यात। লবালা বংশ कि কুল লাশিতে ভর হর কি লো ভার।।

ছারিকার পঞ্জি হুক গো প্রমাণে খোলের কামিনীগণে। কলকের তালী শিহে তুলে দিয়ে নাচান আড়নয়নে।। কুল ব্রী মৃতী কুল লাজ ওয়ে তীতা হরে থাকে খারা। शनकता वाँगी कि छन कृकारत छत्व छूटे वास जाता॥ यप्रि কোন সভী কালে ছাত দিয়া ছরে। সুকাইয়া থাকে। তাঁছার তদর মনসিজ নাম কি রূপে নিবারে তাঁকে॥ কামিনীর কাল বড়ই বিষম কেছ না পারে আঁটিতে। স্কুল নাশাগুণ করেতে করিয়া হাসিয়া প্রবেশে চিতে।। শরীর থাকিলে কুলবতী রব একবারে হত লয়। উইছেতু লোকে বুৰো ফুলবানে অভসু বলিয়া কয়।। তার বংশধর হয়ে যদি কুল-নারী বধে ভর হবে। প্রলো চিত্ররেখা চিরদিন তরে তবে যে কলঙ্ক রবে।। মিথা। কভু হয় দেখ বিচারিয়া শাস্ত্রকারে যাহা কর। পদারাণ মণি আকরে কথন কাচের জনম হয় । • কি আর বলিব ওলো চিত্ররেখা ভেবে দেখ দেখি চিতে। শঠের সমান আছে কেবা আর নারীর কুল নাশিতে।। ৰলিতে বলিতে বিরহ পদ্মোধি অন্তরেতে উথ্লিল। ্ৰয়ন দদীর হুকুল ভাসিয়া হুকুল ভেলে উঠিল।। চতুর সারজ অসুরাগ চিহ্ন উষার দেখি নয়নে। नक्षन मधुश ताथिल मधीत श्रक्तक मदताजानरम ।। ব্ঝে চিত্ররেখা হাসি সুললিভ বাক্য বিভরিল ভারে। 。 অমনি উঠিয়া ক্ষতবৈণে গিয়া কোলেতে মিল উষারে।। মুখ সরসিজ চুন্ধিরা কহিছে কেন্দনা প্রিয়সি আর। মন্মথ সাগর ভরিতে তরণী তুমি সে প্রিয়ে আমার।। প্রস্থান মান জীবনের প্রিয়ে তুমি সে হও ভূষণ। श्रीवन रर्यावम मकन रम जूमि रजागाटक जूरवरह मनः 🏨 ত্রিভূবন মাঝে যজেক রূপসী না হয় ভোষার সমা।

ওছে রসবতি কি আর কাংব বিচারিয়া বেশ্ব মনে।
আঁঘাকে স্থপনে দেখেছ যে তুমি নাজানি আমি স্থপনে।।
এই কথা বলে উত্তরী পঞ্চলে নেত্রনীর মুছাইল।
আনক যতনে প্রবেশ বাক্যেতে উবারে শাস্ত করিল।।
পরে চিত্ররেশা কার্মপুত্র সহ উযার বিরাহ দিয়া।
আানন্দিত মনে চুজনে রাখিয়া স্থানাস্তে রহিল গ্রিয়া॥
যুবক যুবতী প্রকৃল্ল অন্তবে বাসরে গিয়া বিদল।
ছিজ শান বলে বিলম্ব করোনা নিপাপ্রায় পোহাইল—

বিহার।

কামসাগর দম্পতি পার তরে। স্থাধার ধরি স্থাপান করে।। চাৰুপদ্মদল বিজয়ী নয়নে। वित नका करत मनक कुकरन। ফুলবাণ ষেমন মনে পশিল। অসুনি উভয়ের মনঃ টুলিল।। कुरत अवेदी क्षित्र क्षेत्रतः। मृमनां छन विछन हक्ति करत ॥ न्त्रिभवां मिका अन्न निशन्ति करत । বিনয়ে কহিছে ধনী হাত ধরে।। मिथ श्रीन भात श्खार विकल। এত নাহি জানি জানিছ সকল।। (क्षेत्र(योग) इटन (क्षेत्रयक करते। Cश्रमार्याभा अत्म नाहि टकांत्र करते।। দেখ কুল্ল ফুলে অলি চিত্ত রসে। क्लिकोर्ड जलि कडू मोहि राम। কুল শোভা করে সময়ে ফুটিলে।

নবমেম ভূমি কামি চাভকিনী। ज्ञि পূर्व गमी आमि ऋषूनिनी॥ রমণীর এত মিন্তি শুনিয়া। কামপুত্র কছে ভারে আশ্বাসিয়া। কেন শকা কর মনে প্রাণপ্রিয়ে। ভয় নাধি রবে যাইবে টুটিয়ে।। সম জীবন দছে মনে জবাণে। लां। तक मृगांकि कड़ोक मारम॥ एष पूर्वाकत महिल नलिमी। কভু নাহি ফুটে করিণী গামিনি।। रिवथ हक्त विना क्वांथा हेन्दीवत्। হইয়াছে প্রফুল না ভয় কর ॥ বলিয়া ছলিয়া বাত্ পাশ করি। कामिमी धतिशा निल काटल करिया নুপনশিনী বাহু সোণার লতা। কামনন্দন মাঝোতে রতু কথা !! করপদা কবে কুচশদ্ভ শোভা। ৰলিহারি শোভা মুনিচিও লোভা॥ नृश्विभूमी शिवानी त्यव मरल। পশিল পতি নেত্ৰ অলি যুগলে॥ প্রভাকর জিনি স্বধা ধারাধরে। পতি কুন্দ বিনিন্দিত দত্তে ধরে।। মনোহারী নিতম্বেতে কাঞ্চি বাজে। कांमनस्य कांमत्रवट्ड महिल्।। कार्मामकू मत्म छेथल छेतिन। "औरिटर्ग त्रमेश हेलिया পড़िल।। कामनाक्ष्रक त्यम कीनान बादा। कामनमन कामक्कू निराद्ध ।

জলক্রীড়া করি বিহরে ছুজনে। শ্যাম ভোটকছন্দ আদন্দে ভবে॥

উভয়েতে এই রূপে, কিছু দিন চুপেচুপে करत क्षांट त्थ्रम कालाशैन। দেখ খেলা বিধাভার, গার্ত্ত ইল উষ পলাইল সুরভি রাজন / कीन करी पिन निम, कुल एरव बारि हीन, শরীর হইল গুরু ভার ! জলি মাছি সম রেখা, তুই গণ্ডে দিল দ্রেখা, বর্ণ হইল পাশুর আকার।। মুখে সদা উঠে বারি, উদর হইল ভারি, खमगूर्थ পড़ে कांनि माग। ঘন উঠিছে জ্ঞাণ, অলসে সরস মনঃ, ধরাশ্যা সদা অমুরাগ।। আহারে না लग्न मनः, ं मलिन शंदासहन, मीर्घ भाग वरह करन करन। হইল মন্থর গডি, বাণকন্যা রুম্বতী, जमा शांक विजया निक्स तमा! এক দিন সে রূপনী, প্রভির নিকটে বসিং কছিতেছে বিময় করিয়া। **एमं माथ मिरवमम, आजि এ** यम मनः, केंग्रेंचेन करत कि नाभिश्रा॥ আমা গ্ৰাডি ভব মদঃ, পুৰ্বেতে ছিল যেমন, ে মনঃ এখন কি তেমন। ্জাছে নাথ বল ভাই, শুনিতে উৎস্ক পাই, ্ৰ তার পায় সঁপেছি জীবন।।

ভোমা হিলা কেবা আরু, আছে ছে বল আমার, इमि हाँ म आमि कुमुनिनी। ্ত কাল জীয়ে বৃষ্ট্য তোমা ছাড়া যেন নই, কিব। দিন কিবা তমস্থিনী।। াখিলে ভোমার মুখ, ছুঃখ থাকিলেও সুখ, পারাবার উথলে আমার। তুনি নৰ ফান্দ্বিনী, আমি তৰ চাতকিনী, পিপাসিতা সদাই ভোমার।। নেথ হে তিধির লেখা, স্থপনে পাইয়া দেখা, তৰ আশে পুজিয়া উমায়। পেনেশ্ ভোমারে পতি, রেখ মোর এ দিনতি, যেন ন'থ ভুল না আমায়।। দেখ কৰিয়া বিভার, যৌবন ছইতে আর, রুমণী জাতির ধন নাই। জেনে দে ঘোৰন ধন, কদস্কলি যে মনং, এই ডরে সদাই ডরাই।। ভূমিত জান সকলি, বাসি ফুলেতে কি অলি, পুর্বামত করে অনুরাগ। পুৰুষে জানি তেমন, নিতা ভূতনেতে হনঃ. • পুরাতন হইলে বিরাগ।। শুনি বাক্য প্রিয়নীর, কামের কুমার 🙌 **श्रिश्वारका करह** सम्बोदन। खन खन आंग खिरह, कन मां**व नां सि**हर, তৰ মুখ ভঃসি শেত্র দীরে।। পদ্মিনী কভেক সাছে, তুক্ত করি তব ক্যাছে, कृषि स्मात वकः विलामिनी। ভূমি ধাৰে ভূমি জ্ঞান, ভূমি খান অপমান, ्थान त्मांत क्रि ब्रिडिंग्सी।।

তব প্রতি মম মনঃ, এমনি আছে মগন, যেমন স্থাংশ শশধরে ৷ তব বাক্য সুধারাশি, আমি চকোর পিপাসী, বাঁধা আছি চিরদিন ত . ।। নম হৃদয় মাঝারে, চিত্রিভা করি ভোমারে, রাখিয়াছি জনমের মত। c ইথে কি ভুলিতে পারি, তুমি প্রাণাধিকা নারী, তব প্রেমে সদা আছি রত।। ट्रांमात वनन हाँन, कार्यत स्थिती काँन. मम मनः हरकारत वाक्तिता। রেখেছ একইবারে, উভারিয়া যেতে গারে বল প্রিয়ে কি রূপ করিয়া।। তুমি বিমুখী যে জনে, কি কাজ তার জীবনে, তোমা ছীন ধিক সে জীবন। তুমি মুপ্রসন্ধা যার, স্বর্গ ভার কাছে ছার, धना मिटे मार्थक जीवन॥ এই জলধি সংসার, ' মহারত্ন তুমি তার, মম প্ৰাণ বিলাসভূষণ। কেমন করিয়ে প্রিয়ে, বল ভোমাকে ছাডিয়ে द्राव भूमा इदेश कीयन॥ প্রিরে তোমার কারণ, যায় বদি এ জীবন, তবু তোমা ছাড়িতে নারিব। কি আরু অধিক কব, ভোমার নিকটে বুব, पछ पिन जीवन श्रवित।। आहे ऋर्श कृष्टे जन, (প্রামে ছইয়া মগন, করিভেছে প্রেম আলাপন। বজমুটি রামে ছত, বলবামে সে অস্কুড, রন্দর করে উবার ভবন।।

উষাকে পুৰুষ সন্ধৃ, দেখে কোপে কাঁপে অন্ধ, নূপ কাছে জানাইতে ধার। যাইয়া রাজার পাশে, আলুথালু কেল বাসে, रिम्छादारिक मकल कानाय ।। শুনিরা দৈতা রাজন, অধরে করে দংশন, জোধে কম্পামান কলেবরে। -যগান্ত যম সমান, গদা খড়া খুৱুশান, হত্তে করি উঠিল সত্তরে॥ **प्रियम गृह मात्रारित, कारह करित्रा उँ**यारित, বলে আছে কামপুত্র বীর। গুরুর্জ উঠিল ভূপাল, যেন প্রলয়ের কাল, (मंदथ डेवा इडेन कान्द्रित ।। পতিপ্রেমে প্রেমাধীনী, সুপ্রফুল্ল সরোজিনী, মেরামন ভরে শুকাইল। পতির মুখ চাহিয়া, কহিছে রাম' কান্দিয়া, অহে নাথ প্রমান ঘটিল। ঐ দেখ পিতা মোর, কালান্ত সমান ঘোর, ভয়ানক গদা হল্ডে করি। আসিয়াছে ক্রোধভরে, দেখে প্রাণ কাঁপে ডরে, কি উপায়ে প্রাণ রক্ষা করি॥ আমি মরি নাছি ছঃখ, বিদ রিয়াযায় বুক, মনে করে তব অমকল। উপায় বলিয়া দাও, কিসে তুমি রক্ষা পাও, প্রাণ মোর হযেছে বিকল।। বাক্য শুৰ্মি বুমণীয়, অনিকল্প মহাবীয়, 🔑 শক্তিরজীরে কহে আখাসিয়া। चाम क्रिकेट अनगरम, छह दगांत विकृतरम,

· बार्ट थाक ऋषिता हहेशा।।

কন্দুপ্র তাম, পিতামহ অন্তর্গামী, দৈতাকুলান্তক চক্রধারী। সৃষ্টি সংস্থিতি প্রলয়, তাঁহার কটাক্ষে হয়, অহে বাণ্নপতি কুমারি॥ এই বলে মহাবীর, কান্তাকে করে স্বন্ধির, এখানেতে বাবের কিমর ধরে ভীক্ষম্বর্কান, আকর্ণ পূরে সন্ধান, মারে অনিকদ্ধের উপর।। অনিৰুদ্ধ যুদ্ধ করে, পরিখ করিয়া করে, অনেকের জীবন হরিল। পারে বাণের সংহতি, যুদ্ধ করে মহামতি, नागभारम रक्षन इंहेल ॥ নারদ আদি তথায়, কাটিতে নিষেধে তায়, শুনে বান রাথে কারাগারে। मात्रम हत्न विमात्र, भौधगिक गामि यात्र, যুদ্ধ তথ্য কহিতে উধারে ।

উষার খেদ।

নাগপাশে বামপুত্র বন্ধন হইল।
সথী মুখে শুনে উষা ধরায় পড়িল।।
চন্দ্রানন ঢাকিলেক গলিত কুন্তলে।
হেমব যেন বাঁ।পিলেক সুধাংশুমণুলে॥
বেগবং হরে বহে নয়নের নীর।
ভিজ্ঞিল বসন ধারা কোমল শরীর॥
ভানল চুন্তিত বায়ু সমশ্বাস অতি।
বহনে ছুহিছে নাসিকার গজ্মতি।
স্থানে কাঁপিছে বিশ্ব বিভয়ী অধর।
ধূলায় লোটায় প্রীনোষ্ঠ প্রিয়ার।

খনোজ তমুজ হৃদি সরোজ শায়িনী। ধলায় পড়িয়া কান্দে সম কান্সালিনী।। পতি বিনে কিছুই জানেনা যে ললনা। मना थोरक रम रय পंछि शारिनरङ मगना ॥ হেন পতি ক্ছিনে কেমনে সে জীবনে। বঁ ৰিচবে নবগোৰনা ভাবি তাই মনে॥ কত রূপে স্থীগণ প্রবোধে উযারে। কিছুতে উষারে ভাবা বুঝাইতে নারে।। পুতি বিনে যে ললনা কিছু নাহি চায়। (म प्यान-यूरवा मूधु कथां स कथां स II পতি প্রেমসাগরেতে ডুবায়েছে মন। কিরপ করিয়া রামা ভুলিবে সে জম।। নৃপতি কুমারী সতী পতিপরায়ণা। সেকি সহিবারে পারে পতির যাতনা।। রসবতী পতিছু: খে ছু: খিনী হইরা। আৰুল বাস ভ্ৰতে কান্দে বিনাইয়া। অরে নিদারুণ বিধি কি বলিব ভোরে। े তোর বিধি বশে অবলার প্রাণ পোড়ে।। কুলবতী রুমণীর রুমণ পরাণ। ভাহা বিনা ত্রি ইবনে কেবা আছে আন।। ভলো চিত্ররেখা বল কি করি উপায়। কিলে মুক্ত করি নাথে বন্ধনের দার।। শরীর ভাঁছার মীল মলিমী থেমন। সে যে ভয়ানক নাগপাশের বছন।।

माशिमी शाशिमी आमि जाकिमी इट्डा যাত্র। দিলাম তাঁবে আল্যে আনিছা।। ভালত ছিলেন নাথ আপান মন্দিরে । **रुवरा जानिहां जुड़े मिलि क्रुःथिनीटत ॥** কোখায় পাইত ভবে তাঁর দরশন। না হইত নাথে নাগপালের বন্ধন।! কুতান্ত সমান পিতা অভি নিলাকণ। পরাধীনী নারী জাতি কলেতে আগুণ।। কোমল শরীরে কত করেছে আঘাত। স্বৰ্ণ অঙ্গে কতবা হতেছে ব্ৰক্তপাত।। ছঃখিনী লাগিয়া নাথ কত পান ছঃখ। मत्म करत थारत अभि विमतिरक तुक।। সে জন বিহনে প্রাণ কেমনে রাখিব। **(मह (मार्य इलाइल फीरम छो** जिर ।। **এই বলে अवमनी कांन्सिए लां**गिन। দেখে চিত্ররেখা নেত্র দীরেতে ভাসিদ।। ধরাতল হতে ধনী করেতে ধরিয়া। বসায়ে আপন কোলে কছে প্রবেধিয়া॥ ও রাজকুমারি আর কেন্দ্রনা। যাইবে তোমার প্রাণনাথের যাতনা।। পূর্বেষ যদি মোর কথা শুনিতে অবনে। ভবে কেন এত হুঃধ পাবে তৃমি মনে।। कि छात्र इटेरव बल अथन कान्मिटल। কান্দিতে কি হয় প্রেম ভাবিয়া করিলে।।

সহজ শরীর নহে পেটে আছে কাল। মনের আগুণে পাছে ঘটাও জঞ্জান।। विश्रम विनामकर्छ। 🗃 मधुष्रमन। এ সমরে তাঁরে স্থি কর গো স্মরণ।; তিনি বিনা এবিপদ কে নাশিতে পারে! অত্তএর সুবদনি ডাক ভূমি তাঁরে।। দূভীর ভারতী শুনে উষা রস্বতী। করুযোড় করি কহে করিয়া মিনতি।। কোথা হে দারকাপতি জ্ঞীমধুস্থদন। রক্ষাকর আসি তব স্থতের নন্দন।। তোমা বিনা এ দাসীর কেহ নাহি আর। বিপদসাগরে প্রভু ভূমি কর্ণধার।। এইরপে করে স্তুতি বানের কুমারী। জানিলেন অন্তর্জ্ঞ দেব চক্রধারী।। আকাশে থাকিয়া হরি উবারে ভাকিয়া। কহেন মধুর বাক্যে আশ্বাস করিয়া।। কেন্দুলা কেন্দুলা আর বাণের ভসুজে। উদ্ধারিব শীত্র আদি মনোজ তমুজে।। প্লভন্ধ সমান বাণ কি করিতে পারে। ভার সাক্ষ্যে অনিক্জে মিলাব ভোষারে !! এই বলে দৈভারিপু আশ্বাস করিয়া। দারীবতী আসি সবে কছেন ডাকিয়া। কোথা অনিক্ষ বীর কামের নন্দন। তোমাদের মধ্যে माहि দেখি कि कांत्र।।

আমার নিকটে তারে আন শীপ্রতর।
তাবে নাদেখিয়া মোত ব্যাকুল অন্তর
ইতি মধ্যে দেববি নাবদ জপোগন।
আগি কামপ্রত্রের কচিল বিবরণ ।
শুনিয়া বাদবগণ ত্রে ধিত অন্তরে।
বৃদ্ধদক্ষা করি শ্যাম চলেন সত্রে ।

युष्का यां वा

पटक यामव तीतः टक्नाटम कन्निष्ठ गरीतः... रुक्त करिदादि मत्व भाग। 🕠 🛶 র্থর্গী গঞ্জ বাজী, সেনা দেনাণতি নাতি, পদভারে কাঁপায় গ্রার গ কেছ থকা ধরশান, কেছ ভীলু বসুকান, করে করি বেগেডে চলিশ। दृश इखिद गर्डब्स्स, जूमिकस्मा कार्यकार मन मिश श्लाश भृतिल।। इय्रोगना तत कारल, (रन धनरात कारन, উথলিল প্রেলয় সাগর। বুজভ গিরি বরণ, হল মুবল ধানা कति शुरक्ष योग इलश्रद ।। সভ্যেকিরে সঞ্জেকরি, গদাঃশাঙ্গ ধনু ধবি শিব বাকা করিতে পালন। চলিলেন বছুপতি, পূরাইতে দৈতাপতি চির্ভিত মনের মনন।

ं अशेरमदा साम भारतः , जाः व्यक्ति त्मांसहरकः तीवशक्षा जानभित्र मत्न। राज भूतिल वाममा, यहित वाद्यवस्त्री मबर्र का भाव आर्थ रत्।। **डरे वंटम रेमेड शिंड, शिंड, लाय मन स्थाक शिंह.** 3. N | B 4 | 38 | N | BN | भारक र प रेक्फाबात, शहत चाकि यहतातः मिलिटनम्बंगरः किञ्चान । ছত্রণ প্রাক্ষি, শ্লা নাহি লেগালত, रीइकाम गत्राक गडीत। वार रैमानात छेलत, माद्र मात जीकूर... रान रेममा हर्म अध्य ।। टमिश्री क्षितिक दान, युगीन रम अस्ति, तरम क्रिज तरन खाटननिया। नाटक रिटम यहनन, महित्य ना शाहि तन यक्रमना ८५ल श्लाहेश।॥ द्वित दर्भाद्रभ कम्भकांम, देवजा तिश्र सङ्ग्रांच, • তীকু অন্ত প্রহার করিল।। दार्वाद वर्ष्टक वान, कांग्रिक्टर थान थान, वागज्य विद्यालितिला।। बहेकरेल कुडे कम, करत **एसक** त्रन, िरुष्ट्रे कारत किनिट्ड मा भारत। न्य गड क्या बान, जना श्रीहरा समान करमात्र जेगादत जान महिता।

বিত্তি কটিবারে ছরি, স্কুক্পশি জন্ত ধরি, মারিলেন বাণভুজবদে।

काष्टिल प्रकल कत्, देहल भ्यू जु जधर,

যুক্ত বিংয়ে পড়িলেক রংগ।!

বাবে করিছের রক্ষণ, সদলেছে পঞ্চানন, আগন্দ করি রণস্থলে।

কিছুকাল যুদ কবি, গণভূমি পরিংকি। ভঙ্গ নেল লইগং সদলে॥

শিষ জর বিষ্ণু জ্বর, করে যুদ্ধ যোরভর-পার্গজয় হৈল শিব জ্বর ৷

িছয় হটনে হরি, বাণ দূপে সর্দে করি। শিব আদি কুমের গোচের।।

যুদ্ধে করিলেন ক্ষান্ত, পরেতে বারিনীকান্ত, দৈত্যরাক্ষে দিলেন ফভয় ৷

ভূষণে ভূষিত করি, দাসল সী হয় করী, কুষ্ণে বাণ দিল সমুদয়॥

উহাকন্যা সহ হাণ, লয়ে কামের সন্তান, কুঞ্চপায় করিল অর্পণ।

-প্রেমে হয়ে উতরোল, কাম বাণে দিল কোল্। দৌহে হৈল আদিন্দে মধন।।

শিব কুঞ্চ সম্ভাবণ, মণি কাঞ্চনে নিলম, বহু দিন পরেতে ছইল।

দেখিয়া দেবভাগণ, পারিজাত বারিখণ, ছরিছর পদেতে করিল।। পারে দেব দৈতাহ্মরি। দৈতারাজে ভুস্ট করি, শিব কাডে লইয়া বিদায়।

আনন্দে হয়ে মগন, লয়ে দৰ বন্ধুগৰ, আইলেন পুরী দারকায়।

থারাবতী রামাগণ, বেগে করিছে গমন, বরুকন্যা দেখিবার আংশ।

দেশিতেছে বিনা**নেতে, সহামে**খের কোলেতে, যেন স্থিনদামিনী প্রকাশে !!

বতেক কৃষ্ণের বধু, হৈরি মাতি মাতিবদূ, সকলের হৈল হাট্টমতি।

প্রকৃত্ত প্রকৃতি ক্রিন্ত ক্রিন ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন্ত ক্রিন

পরে বিধি অনুসাধে, বিবাহ নিয়ে দোঁহারে সথে বাস করেন জীছরি।

এক তৈক সমাপদ, ভামের যাহা মনন, পূর্ণ তৈক বল হার হার।। শ্বন্ধ নিদিশতে বিদিশত নতি।
দেখি নামকরে প্রস্থুঃ ইতিব নতি।
পক্ষ লাগে জলনিধি নিদিল ব্যক্ত ।
বিচত্তে শ্রাম এছ গুল ক্রিল ভগন্ধ।
প্রকাশ প্রাম এ এছ পূর্বাছয়।
প্রতিক সন্তা) অফ্রাশত একাশীতে রয়।
পালাবলী ভাতশাত সপ্তমা চলিশ।
সমূত অকর ইথে আছে পঞ্জিলশ।